International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 5, Issue 10, October 2018
Website- www.aarf.asia, Email :editoraarf@gmail.com

उच्च व निम्न परिवार के विद्यार्थियों के नैतिक स्तर, मूल्य विकास तथा शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन

Dr. Rajesh Kumar
Vice Principal & Assistant Professor
Defence (PG) College of Education
Tohana Fatehabad Haryana

प्रस्तावना :–

शिक्षा मानव जीवन में बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा एक जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है। यह कभी समाप्त नही होती। यह हर एक व्यक्ति के जन्म से शुरू होती है और अन्तिम दिन तक चलती रहती है। आज परिवार और समाज में जो शिक्षा प्राप्त कर रहा है, वह जाति, धर्म, संस्कृति और क्षेत्र में बंधी है। शिक्षा द्वारा मानव का जीवन स्तर ऊँचा उठता है और ऊँचाईयों को छूता है। शिक्षा को ऐसी प्रक्रिया माना गया है कि जो मानव के अन्दर छूपी हुई योग्यता शक्तियों का विकास करती है।

शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जो व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करती है। शिक्षा समाज, राष्ट्र व सभ्यता के उत्थान के लिए अनिवार्य है। शायद भारतवासियों ने शिक्षा के इस महत्व को समझ लिया था, इसीलिए आदि काल से ही भारत में एक आदर्श व उन्नत शिक्षण व्यवस्था का विकास हुआ।

समाज दो भागों में बंटा हुआ है – उच्च वर्ग, निम्न वर्ग। उच्च वर्ग के अन्तर्गत उच्च परिवार आता है, निम्न वर्ग के अन्तर्गत निम्न परिवार आता है। उच्च परिवार में वे परिवार आते है जिनका जीवन स्तर भौतिक सुख–सुविधाओं से सम्पन्न होता है। निम्न परिवार में वे परिवार आते है जिनको जीवन जीने में मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। उच्च परिवार के

विद्यार्थियों को शिक्षा ग्रहण करने में आर्थिक समस्याओं का सामना नही करना पड़ता, जबकि निम्न परिवार के विद्यार्थियों को शिक्षा ग्रहण करने में आर्थिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है।

समस्या कथन :–

''उच्च व निम्न परिवार के विद्यार्थियों के नैतिक स्तर, मूल्य विकास तथा शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन।''

शब्दों का परिभाषीकरण :–

उच्च परिवार :–उच्च परिवार से तात्पर्य है जो भौतिक सुख सुविधाओं से सम्पन्न हो।जिनका जीवन स्तर उच्च होता है तथा जीवन के उच्च स्तर को बनाए रखने के लिए सदैव तत्पर एवं प्रयासरत रहते है।

निम्न परिवार –निम्न परिवार से तात्पर्य है जिनके पास मूलभूत सुविधाओं का अभाव होता है। जीवन यापन करने में कठिनाईयों का या असुविधाओं का सामना करना पड़ता है।

विद्यार्थी –विद्यालय में विद्या प्राप्त करने वाले को विद्यार्थी कहते है जो अध्ययन का केन्द्र बिन्दु होता है। विद्यार्थी औपचारिक रूप से विद्या प्राप्त करने वाला जीव है, जिसके द्वारा व्यवहार में परिवर्तन करने के लिए सचेष्ट प्रयास किये जाते है।

नैतिक –नैतिकता मनुष्य में एक विशष गुण होता है। जिसके सदाचरण, विनयशोलता, परोपकारी भाव, दान एवं दया आदि गुण समाहित होते हैं। जो शिक्षा के द्वारा मनुष्य के व्यवहार में समाहित करने का प्रयास करते है।

मूल्य –मूल्यां से अभिप्राय नैतिक मूल्यों से है जिसमें नैतिकता की भावना समाहित हो अथवा वह मूल्य जो जीवन की प्राथमिकताओं को निर्धारित करते हैं।

शैक्षणिक उपलब्धि –शैक्षणिक उपलब्धि से तात्पर्य है कि शिक्षा प्रक्रिया के द्वारा सत्र में ग्रहण किये गये अंकों एवं प्राप्तांको से है अर्थात निर्धारित मानक एवं लक्ष्य स्तर पर मापन कर यह सुनिश्चित किया जाता है कि प्राप्त शिक्षा से उपलब्धि में कितना विकास किया जा सका है।

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. उच्च व निम्न परिवार के विद्यार्थियों के नैतिकता स्तर का अध्ययन।
2. उच्च व निम्न परिवार के विद्यार्थियों के मूल्य विकास का अध्ययन।
3. उच्च व निम्न परिवार के विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का अध्ययन।
4. उच्च व निम्न परिवार के विद्यार्थियों के नैतिक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन।
5. उच्च व निम्न परिवार के विद्यार्थियों के मूल्य विकास का तुलनात्मक अध्ययन।
6. उच्च व निम्न परिवार के विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना :–

1. उच्च व निम्न परिवार के विद्यार्थियों के नैतिक स्तर में कोई अन्तर नही है।
2. उच्च व निम्न परिवार के विद्यार्थियों के मूल्य विकास में कोई अन्तर नही है।
3. उच्च व निम्न परिवार के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई अन्तर नहीं है।

अध्ययन में प्रयुक्त अनुसंधान विधि :–

उच्च व निम्न परिवार के विद्यार्थियों का नैतिक स्तर, मूल्य विकास, शैक्षिक उपलब्धि, अभिप्रेरणा को देखने के लिये अनुसंधानकर्तानेे विवरणात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है। क्योंकि इस विधि में न तो स्वतन्त्र चर या परतन्त्र चर का प्रभाव देखा जाता है और न ही चरो को घटाया–बढ़ाया जाता है। बल्कि यथास्थिति में चरों के प्रभाव को सिर्फ देखा जाता है। शैक्षिक शोध में वर्णात्मक विधि का आम प्रयोग होता है। इसे मानवीय सर्वेक्षण के नाम से भी पुकारा जाता है। इसका मुख्य मुद्दा यथार्थ के विभिन्न पक्षों का वर्णन देना है।

अध्ययन में प्रयुक्त अभिकल्प :–

प्रस्तुत अध्ययन में अनुसंधानकर्ताद्वारा स्थाई द्वि–समूह तुलनात्मक अभिकल्प का प्रयोग किया गया है।

इस प्रकार के अभिकल्प में द्वि–स्थाई तुलनात्मक समूह अभिकल्प के भी गुण होते है। इस प्रकार के अभिकल्प में दो स्थिर या स्थायी प्रकार के समूहों को पहले अध्ययन के लिये चुन लिया जाता है। इन समूहों को समतुल्य बनाने का प्रयास अध्ययनकर्ता नहीं करता। समूहों को चुन लेने के बाद वह दोनो समूहों के प्रायोगिक उपचार से पहले वह दोनो समूहों के निष्पादन का मापन करता है अथवा पूर्व परीक्षण करता है। फिर प्रायोगिक उपचार देता है और पुनः पश्चात परीक्षण करता है अथवा प्रायोगिक उपचार के बाद निष्पादन का मापन करता है। दो स्थितियों में प्राप्त मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता कर जांच टी परीक्षण के द्वारा करता है।

अध्ययन में प्रयुक्त जनसंख्याः–

प्रस्तुत शोध टोहानाब्लॉक के दस माध्यमिक विद्यालयों के उच्च व निम्न परिवार के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में लिया गया है।

इस अध्ययन में 200 विद्यार्थियों को लिया गया है। 100 विद्यार्थी उच्च परिवारों के है और 100 विद्यार्थी निम्न परिवारों के है। इसलिये ये शोधकर्ताद्वारा चुने गये विद्यार्थियों की परिमित जनसंख्या है।

अध्ययन में प्रस्तुत न्यायदर्शः–

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता ने दस माध्यमिक विद्यालयों में से क्रमशः 100 उच्च परिवार व 100 निम्न परिवार के विद्यार्थियों को न्यायदर्श के रूप में लिया है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरणः–

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता द्वारा आंकड़ों के संकलन हेतु मानकीकृत प्रश्नावली का उपयोग किया गया है।

डा. टी. आर. शर्माके द्वारा बनाये गये Academic Achievement Motivation Test का प्रयोग किया गया।

डा. ए. सैन गुप्ता व **प्रौ. ऐ. के. सिंह** के द्वारा नैतिक–मूल्य–मापनी के माध्यम से माध्यमिक स्तर के 10 विद्यालयों के विद्यार्थियों के नैतिक– मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन द्वारा शोध कार्य पूर्ण किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त आंकड़े :–

प्रस्तुत अध्ययन में अध्ययनकर्ता द्वारा प्रदत्तों को एकत्र करने के लिये प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। प्रश्नावली के द्वारा प्राप्त आंकड़े समान–आवान्तर आंकड़े है।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय पद्धतियाँ :–

आंकड़ो के विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय पद्धतियों का विशेष महत्व है। अतः अध्ययन में निम्न प्रकार की सांख्यिकीय पद्धति का प्रयोग किया गया है।

(क) माध्य (Mean) :–

उच्च व निम्न परिवार के विद्यार्थियों का नैतिक स्तर, मूल्य विकास, शैक्षणिक उपलब्धि, अभिप्रेरणा को जानने के लिये प्रश्नावली के माध्यम से प्राप्तांको का माध्य ज्ञात किया गया। माध्य समंको के सेट का सारे मूल्यों के योग को मूल्यों की कुल संख्या से भाग देकर प्राप्त किया जाता है।

माध्य = $M = \frac{\sum X}{N}$

M =माध्य योग

Σ=योग वितरण में समक

X =वितरण में संमक

N =समंको की संख्या

(ख) मानक विचलन (Standard deviation):–

विद्यार्थियों के प्राप्तांको का उनके औसत मान से विचलन देखने के लिए मानक विचलन निकाला जाता है।

मानक विचलन को औसत विचलन का वर्गमूल भी कहा जाता है। यह वितरण के औसत से सब विचलनों के वर्गो के वर्गमूल का औसत है। प्रतिदर्श का मानक विचलन

$$SD = \sigma = \frac{\sqrt{\sum d^2}}{N} \quad \sqrt{\sum d^2}$$

σ =प्रतिदर्श का मानक विचलन

d =यथा प्राप्त आंकड़ो का मध्य बिन्दु से विचलन

N =मापों की संख्या

$\sqrt{\sum d^2}$ =प्राप्त संख्या का धनात्मक वर्गमूल

ख) टी टैस्ट (T-Test):–

दो समूहों की तुलना करने के लिये टी–टैस्ट लगाया गया है।

$$T\text{-}Test = \frac{M_1 - M_2}{\sqrt{\frac{\sigma_1^2 + \sigma_2^2}{N1 + N2}}}$$

M_1 =मध्यमान पहले ग्रुप का
M_2 =मध्यमान दूसरे ग्रुप का
σ_1 = प्रमाणिक विचलन पहले ग्रुप का
σ_2 =प्रमाणिक विचलन दूसरे ग्रुप का
N_1 =पहले ग्रुप के आंकड़ो की संख्या
N_2 =दूसरे ग्रुप के आंकड़ो की संख्या

परिणाम :–

1. सारणी न0 1 इसमें उच्च परिवार के विद्यार्थियों के नैतिक स्तर व मूल्य विकास के अध्ययन में पाया गया है कि उच्च परिवार के 50 विद्यार्थियों को लिया गया है जिनमें प्राप्तांको का मध्यमान 29.84 है तथा इनका प्रमाणिक विचलन 2.749 है अर्थात् प्रतिशतांक सारणी के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि यह मान 83 प्रतिशतांक में आता है। जो विद्यार्थियों के नैतिक स्तर व म्ल्य विकास के अति उच्च स्तर को दर्शाता

है। इसलिए अध्ययनकर्ता पूर्ण विश्वास के साथ कह सकता है कियह विद्यार्थियों के नैतिक स्तर व म्ल्य विकास के अति उच्च स्तर को दर्शाता है।

2. सारणी न0 2 इसमें निम्न परिवार के विद्यार्थियों के नैतिक स्तर व मूल्य विकास के अध्ययन में यह पाया गया है कि निम्न परिवार के 50 विद्यार्थियों को लिया गया है जिनमें प्राप्तांको का मध्यमान 30.56 है तथा इनका प्रमाणिक विचलन 2.922 है अर्थात् प्रतिशतांक सारणी के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि यह मान 86 प्रतिशतांक का माप पाया गया है जो कि उच्च स्तर का ह जिसके आधार पर अध्ययनकर्ता इस निष्कर्ष पर पहुंचा है कि यहनिम्न परिवार के विद्यार्थियों का नैतिक स्तर व म्ल्य विकास के अति उच्च स्तर को दर्शाता है।

3. सारणी न0 3 इसमें उच्च परिवार के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा के अध्ययन में पाया गया है कि उच्च परिवार के 50 विद्यार्थियों को लिया गया है जिनमें प्राप्तांको का मध्यमान 29.84 है तथा इनका प्रमाणिक विचलन 18.9 है। प्रतिशतांक सारणी के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि 76 प्रतिशतांक का माप पाया गया जो कि उच्च स्तर का है। जिसके आधार पर अध्ययनकर्ता इस परिणाम पर पहुंचाहै कि यह उच्च परिवार की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा के उच्च स्तर को दर्शाता है।

4. सारणी न0 4 में निम्न परिवार के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा के अध्ययन में यह पाया गया है कि निम्न परिवार के 50 विद्यार्थियों को लिया गया है जिनमें प्राप्तांको का मध्यमान 30.48 है तथा इनका प्रमाणिक विचलन 12.24 है। प्रतिशतांक सारणी के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि यह मान 78 प्रतिशतांक का माप पाया गया जो कि उच्च स्तर का है। जिसके आधार पर अध्ययनकर्ता इस परिणाम पर पहुंचाहै कि यहनिम्न परिवार के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा के उच्च स्तर को दर्शाता है।

5. सारणी न0 5 में उच्च व निम्न परिवार के विद्यार्थियों के नैतिक स्तर व मूल्य विकास के तुलनात्मक अध्ययन में पाया गया कि उच्च व निम्न परिवार के विद्यार्थियों के नैतिक

स्तर व मूल्य विकास के छात्रों को संख्या 50 है तथा उच्च का मध्यमान 29.84 है तथा निम्न का मध्यमान 30.56 है और उच्च व निम्न के विद्यार्थियों का प्रमाणिक विचलन 2. 749 तथा 2.922 पाया गया। सार्थकता स्तर 98^0 तथा 98^0 पर टी–टैस्ट का सारणी मान 1.28 पाया गया कि दोनों ग्रुपो में सार्थक अन्तर नहीं। अतः अध्ययनकर्ता इस निष्कर्षपर पहुंचाहै कि उच्च व निम्न परिवार के विद्यार्थियों के नैतिक स्तर व मूल्य विकास में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

6. सारणी न0 6 में उच्च व निम्न परिवार के विद्यार्थियो की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा के तुलनात्मक अध्ययन में पाया गया कि उच्च व निम्न परिवार के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में छात्रों की संख्या 50 है तथा इनका मध्यमान 29.04 तथा 30.48 है। उच्च व निम्न परिवार के विद्यार्थियों का प्रमाणिक विचलन 18.9 तथा 12.24 पाया गया। सार्थकता स्तर 98^0 तथा 98^0 पर टी–टैस्ट का सारणी मान 0.45 पाया गया कि दोनों ग्रुपों में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः अध्ययनकर्ता इस निष्कर्षपर पहुंचा है कि उच्च व निम्न परिवार के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष :–

उच्च व निम्न परिवार के विद्यार्थियों का नैतिक स्तर, मूल्य विकास तथा शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा के अध्ययन में पाया गया कि उच्च परिवार के विद्यार्थियों के नैतिक स्तर व मूल्य विकास अति उच्च स्तर के है। जबकि निम्न परिवार के विद्यार्थियों का नतिक स्तर व मूल्य विकास भी अति उच्च स्तर का है। निम्न परिवार व उच्च परिवार के नैतिक स्तर व मूल्य विकास में बहुत कम अन्तर पाया गया जो कि नग्णय है। उच्च परिवार के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि व अभिप्रेरणा के अध्ययन में पाया गया कि उच्च परिवार के विद्यार्थियों की शक्षणिक व अभिप्रेरणा उच्च स्तर की है तथा निम्न परिवार की शैक्षणिक उपलब्धि तथा अभिप्रेरणा भी उच्च स्तर की है। उच्च व निम्न परिवार के विद्यार्थियों के नैतिक स्तर व मूल्य विकास के तुलनात्मक अध्ययन में पाया गया कि इनके मौलिक स्तर व मूल्य विकास में कोई

सार्थक अन्तर नहीं है। उसी प्रकार शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में भी कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा के स्तर में शिक्षा में सुधार का प्रतीक है। निष्कर्ष के तौर पर अध्ययनकर्ता कह सकता है कि आज के समय में शैक्षणिक उपलब्धि का स्तर शिक्षा में उच्च स्तर का है।

उच्च निम्न परिवार में नैतिक स्तर व मूल्य विकास में जो अन्तर पाया गया वो उच्च स्तर के विद्यार्थियों का निम्न है। इसके अनेक कारण हो सकते है या तो ये विद्यार्थी टी.वी. की ओर ज्यादा ध्यान देते है या इनके माता–पिता इनकी ओर कम ध्यान देते है क्योंकि उच्च परिवार के माता–पिता अपने व्यवसाय में ज्यादा कार्यरत रहते है। उच्च व निम्न प्रकार के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का स्तर कुछ निम्न है या तो वे अपनी पढ़ाई की ओर विशष ध्यान नहीं देते या उनको सही प्रकार से परामश नहीं मिल रहा। इसलिए इन विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रणाली में सुधार की आवश्यकता है।

अगर उच्च व निम्न परिवार के विद्यार्थियों में थोड़ा बहुत अन्तर आया है वह मध्यवर्ती चर के कारण आया है।

शैक्षिक निहितार्थ :–

1. यह अध्ययन उच्च परिवार के विद्यार्थियों के नैतिक स्तर व मूल्य विकास को उच्च बनाने के लिए आवश्यक है।
2. यह अध्ययन निम्न परिवार के विद्यार्थियों के नैतिक स्तर व मूल्य विकास को उच्च बनाने के लिए उपयोगी है।
3. यह अध्ययन उच्च परिवार के विद्यार्थियों में शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा को उच्च बनाने के लिए भी उपयोगी है।
4. यह अध्ययन निम्न परिवार के विद्यार्थियों में शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा को उच्च बनाने के लिए भी उपयोगी है।

5. यह अध्ययन जिला स्तर या राज्य स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक स्तर व मूल्य विकास को उच्च बनाने में सहायक है।
6. इस अध्ययन द्वारा विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों के बारे में उनके माता–पिता को जानकारी प्राप्त हुई जिससे वे अपने बच्चों के व्यवहार में परिवर्तन ला सकेंगे।
7. इस अध्ययन द्वारा विद्यार्थियों को स्वयं के नैतिक स्तर, मूल्यों तथा उपलब्धि के बारे में जानकारी प्राप्त हुई जिससे वे आत्मवलोकन करके अपने व्यवहार में परिवर्तन ला सकेगे।
8. विद्यार्थी राष्ट्र के भविष्य निर्माता है। अगर उनमे नैतिक मूल्य सही है तभी वे आदश भावी नागरिक बनकर स्वस्थ समाज कानिर्माण करेंगे।

भावी शोध के लिए सुझाव :–

1. हरियाणा राज्य के विद्यार्थियों का नैतिक स्तर व मूल्य विकास का अध्ययन किया जा सकता है।
2. हरियाणा राज्य के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा काअध्ययन किया जा सकता है।
3. केन्द्रीय विद्यालयों के विद्यार्थियों का नैतिक स्तर व मूल्य विकास का अध्ययन किया जा सकता है।
4. केन्द्रीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का अध्ययन किया जा सकता है।
5. केन्द्रीय विद्यालय तथा नवोदय विद्यालय के विद्यार्थियों के नैतिक स्तर व मूल्य विकास का अध्यययन किया जा सकता है।
6. प्राथमिक स्तर व उच्च स्तर के विद्यार्थियों को शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का अध्ययन किया जा सकता है।
7. नवोदय विद्यालय के विद्यार्थियों का नैतिक स्तर व मूल्य विकास का अध्ययन किया जा सकता है।